न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।।१४।।

न=नहीं; **माम्**=मुझे; **कर्माणि**=कर्म; **लिम्पन्ति**=बाँधते; **न**=नहीं है; **मे**=मेरी; **कर्मफले**=कर्मफल में; **स्पृहा**=कामना; **इति**=इस प्रकार; **माम्**=मुझे; **यः**=जो; **अभिजानाति**=जानता है; **कर्मभिः**=कर्मफल से; **न**=नहीं; **सः**=वह; **बध्यते**=लिपायमान होता।

अनुवाद

मुझ पर किसी कर्म का प्रभाव नहीं होता क्योंकि मुझे कर्मफल की कामना नहीं है। मेरे सम्बन्ध में इस सत्य को जानने वाला भी कर्मफल में लिपायमान नहीं होता। १४।।

तात्पर्य

यह संसार का सर्वमान्य संवैधानिक अभिधान है कि राजा दण्डनीय अथवा राज नियमों के आधीन नहीं हो सकता। इस न्याय से श्रीभगवान् भी अपने द्वारा रचित प्राकृत-जगत् की क्रियाओं से लिपायमान नहीं होते। सृष्टि करने पर भी वे उससे असंग रहते हैं। इसके विपरीत, प्राकृत पदार्थों पर प्रभुत्व करने की प्रवृत्ति के कारण जीवात्मा कर्मफल में बँध जाते हैं। किसी संस्थान का स्वामी कर्मचारियों के उचित-अनुचित कर्म के लिए उत्तरदायी नहीं; कर्मचारी स्वयं उत्तरदायी हैं। जीवात्मा इन्द्रियतृप्ति के लिए नाना क्रियाओं में संलग्न हैं। भगवान् ने इन क्रियाओं का विधान नहीं किया है, तथापि जीवात्मा उत्तरोत्तर अधिक उत्तम इन्द्रियतृप्ति करने के लिए इस संसार में कर्म कर रहे हैं और मृत्यु के अनन्तर स्वर्गीय सुख चाहते हैं। श्रीभगवान् पूर्ण आप्तकाम हैं, उनमें तथाकथित स्वर्गीय सुख के प्रति लेशमात्र भी आकर्षण नहीं है। स्वर्गीय देवता उन के द्वारा नियुक्त सेवक हैं। कोई साधारण स्वामी भी उस तुच्छ सुख की इच्छा कभी नहीं करता, जो उसके सेवकों द्वारा वाञ्छित हो। इसलिए लौकिक कर्म एवं कर्मफल से भगवान् पूर्ण विरक्त हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर प्रकट होने वाली नाना प्रकार की वनस्पतियों की हेतु वर्षा नहीं है, यद्यपि वर्षा के अभाव में इनकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। वैदिक स्मृति में इस तथ्य की पुष्टि है:

निमित्तमात्रमेवासौ सृज्यानां सर्गकर्मणि।
प्रधानकारिणीभूता यतो वै सृज्यशक्तयः।।

प्राकृत सृष्टि के परम कारण एकमात्र श्रीभगवान् हैं, प्रकृति तो केवल निमित्त कारण है, जिससे ब्रह्माण्डीय सृष्टि दृष्टिगोचर होती है। देवता, मनुष्य तथा निम्न पशु आदि सभी प्राणी पूर्वकृत शुभ-अशुभ कर्मफल भोगने को बाध्य हैं। श्रीभगवान् इन क्रियाओं के लिए उन्हें समुचित सुविधा और प्राकृत गुणों के नियम सुलभ कराते हैं, परन्तु जीवों की किसी भी अगली-पिछली क्रिया के लिए वे उत्तरदाता नहीं। वेदान्त सूत्र में सिद्ध किया गया है कि भगवान् किसी जीव से पक्षपात नहीं करते। जीवात्मा